प्रकाशन तिथि : 01 फरवरी, 2024
प्रेषण तिथि : 04 फरवरी, 2024

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 22 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

देश की राजधानी में मनाई पूज्य श्री की जन्म शताब्दी, देशभर से जुटे हजारों समाजबंधु

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी की 100वीं जयंती के उपलक्ष में मनाए जा रहे जन्म शताब्दी वर्ष का समापन समारोह 28 जनवरी को दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में मनाया गया। यह देश की राजधानी में होने वाला राजपूतों का अब तक का सबसे बड़ा सम्मेलन रहा, जिसमें देश भर से बड़ी संख्या में स्वयंसेवक व समाजबंधु अपने प्रेरणास्रोत पूज्य तनसिंह जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने और सामाजिक एकता का संदेश देने के लिए एकत्र हुए। कार्यक्रम में राजनेता, अधिकारी, उद्योगपति, धार्मिक और सामाजिक व्यक्तित्व और अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल हुए। देश के अलग अलग राज्यों से पारंपरिक वेशभूषा धोती कुर्ता और केसरिया साफा पहनकर समाजबंधु कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तो वहीं मातृशक्ति ने भी केसरिया पोशाक पहनकर बड़ी संख्या में कार्यक्रम में भागीदारी निभाई। कार्यक्रम में पहुंचने के लिए अनेक विशेष रेलगाड़ियां भी बुक की गई। दक्षिण भारत के कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु जैसे राज्यों से भी लोग कार्यक्रम में शामिल हुए। राजस्थान भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी, केके विश्नोई (राज्य मंत्री राजस्थान सरकार), राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग, राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत, शेरगढ़ विधायक बाबू सिंह राठौड़, सिवाना विधायक हमीर सिंह भायल, बानसूर विधायक देवी सिंह शेखावत, शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी, जैसलमेर विधायक छोटू सिंह भाटी, राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री भंवर सिंह भाटी, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष राव राजेंद्र सिंह, चित्तौड़गढ़ विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, पोकरण विधायक प्रताप पुरी, पूर्व राज्यपाल वीपी सिंह, दूधेश्वर मठ के नारायण गिरी जी महाराज, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महेंद्र सिंह धवन, उत्तराखंड सरकार में कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत, मनोज चौहान (एडिशनल डायरेक्टर इनकम टैक्स), राघवेंद्र प्रताप सिंह (डायरेक्टर कस्टम), सौरभ सिंह (कमिश्नर इनकम टैक्स) उपस्थित रहे। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

निर्मूल भय को छोड़कर सच्चे क्षत्रिय बनें: संरक्षक श्री

मेरे प्रिय आत्मीयजन! पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष का अब समापन हो रहा है। तनसिंह जी के बारे में बहुत कुछ बात हो गई हैं जिन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं है। मुझे महाभारत का एक किस्सा याद आता है। जब महाभारत का युद्ध कौरव और पांडवों के बीच न होने के लिए जितने भी समझौते किए जाने थे, उनके लिए प्रयास हुए लेकिन युद्ध होना आवश्यक हो गया। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

(पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश)

'कौम के इतिहास में आग बुझाने वालों में आए हमारा नाम'

आज एक ऐतिहासिक पल जो यहां आया हुआ प्रत्येक व्यक्ति जी रहा है, जो एक आनंद की अनुभूति कर रहा है उसे आनंद के परमानंद को मैं प्रणाम करता हूं। आज पूज्य तनसिंह जी की सौवीं जयंती के समारोह में राष्ट्र के कोने-कोने से लोग आए हैं। किसी व्यक्ति की जन्म जयंती इतने वर्षों बाद भी मनाई जाए, उसका क्या कारण हो सकता है। केवल यही कि वह व्यक्ति युगपुरुष है। युगपुरुष उसे कहा जाता है जो युग की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए आता है। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

(माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास) के उद्बोधन का संपादित अंश

'कौम का दर्द आग का शोला न बन जाए'

पूज्य तनसिंह जी का जन्म 25 जनवरी 1924 को हुआ था और 25 जनवरी 2024 को जो 100 साल पूरे हो रहे हैं उसको श्री क्षत्रिय युवक संघ का जहां-जहां भी काम हो रहा है वहां बड़े धूमधाम से और उत्साह पूर्वक मनाया गया। 2023 में जब जयंती मनाई उस समय यह निर्णय लिया गया कि इस एक वर्ष को समारोह पूर्वक मनाना है और इसीलिए तभी से अनेकों कार्यक्रम हुए हैं। गांव में हुए हैं, शहरों में हुए हैं, बड़े-बड़े कार्यक्रम हुए हैं, वर्चुअल भी हुए हैं। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

(श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी) के उद्बोधन का संपादित अंश

(पृष्ठ एक से लगातार)

देश की राजधानी...

इनके साथ ही श्रेयांश प्रताप सिंह (डिप्टी डायरेक्टर इनकम टैक्स), प्रद्युम्न सिंह (जॉइंट कमिश्नर इनकम टैक्स), अमित सिंह (जॉइंट कमिश्नर कस्टम्स), पुष्पेंद्र सिंह भदोरिया (भारतीय सांख्यिकी सेवा), जेवर विधायक धिरेन सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता सुधीर त्यागी, सत्यम गिरी जी महाराज (कोरेश्वर धाम सिवाना), परीक्षित सिंह सोलंकी (राणा पूंजा जी सोलंकी के वंशज), जालम सिंह रावलोत, समुद्र सिंह नौसर, स्वरूप सिंह खारा, भवानी सिंह कालवी, सूरजपाल सिंह अम्मू, राज शेखावत, महावीर जति जी महाराज (गाड़ोदा धाम), लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, जन्मेंजयराज सिंह, जैसलमेर राजमाता मुकुट राज्य लक्ष्मी राजे, जम्मू कश्मीर के पूर्व मंत्री शक्ति सिंह परमार, नवलगढ़ विधायक विक्रम सिंह जाखल, इनकम टैक्स चीफ कमिश्नर उमा सिंह और सुजीत कुमार सिंह, कुलपति वी के सिंह, रेवदर विधायक मोतीराम कोली, प्रताप सिंह (जिला प्रमुख जैसलमेर), पद्मभूषण पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव, लाडपुरा विधायक कल्पना राजे, पूर्व डीजी व भारत में पुलिस सुधारों के पुरोधा प्रकाश सिंह, नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुनयना सिंह, रेवदर के पूर्व विधायक जगसीराम कोली, राजपूत सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई, मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा, उत्तरप्रदेश के पूर्व मंत्री मदन चौहान, किसान मजदूर यूनियन के अध्यक्ष ठाकुर पूरण सिंह, अजय शंकर सिंह (वित्त सलाहकार, भारत सरकार), भागीरथ सिंह (वायरलेस एडवाइजर व सचिव, संचार मंत्रालय, भारत सरकार), मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह, राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति शिव सिंह सारंगदेवोत, विद्या प्रचारिणी सभा उदयपुर के सचिव महेंद्र सिंह राठौड़, प्रबंध निदेशक महोब्बत सिंह राठौड़, पूर्व विधायक सांगसिंह, शैतान सिंह, बिहारी लाल विश्नोई, रावल त्रिभुवन सिंह बाड़मेर, मेवाड़ क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष अशोक सिंह मेतवाला, हरिशचंद्र सिंह जसोल सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में समाज के हजारों महिला पुरुषों ने पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की।

निर्मूल भय को छोड़कर सच्चे क्षत्रिय बनें: संरक्षक श्री

(पेज एक से लगातार)

तब भगवान कृष्ण आखिरी बार हस्तिनापुर गए और उस समय वह अपनी बुआ कुंती के पास मिलने के लिए गए और कहा कि आपका अपने पुत्रों के लिए कोई संदेश हो तो वह मैं उनको जाकर बता दूं। तब कुंती ने कहा कि जिस दिन के लिए क्षत्राणियां पुत्रों को जन्म देती हैं वह दिन आज आ गया है। उस दिन के लिए हमको भी तैयार रहना चाहिए। हमको भी सपूत की मौत मरने के लिए तैयार रहना चाहिए और जिस काम के लिए भगवान ने हमको जन्म दिया है उस काम को किए बिना कभी भी नहीं मरना है, यह हमारा संकल्प होना चाहिए। पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि दीप की विशेषता इसी में है कि बुझने से पहले हजारों दीपक जला दे। तो तनसिंह जी ने तो यह काम कर दिया जो इस कौम को, इस राष्ट्र को, इस संस्कृति को बचाने के लिए किया जा सकता था उसकी पूरी विरासत हमको सौंप के गए हैं। हम उसको संभाल सके या नहीं, यह कौन सिद्ध करेगा? हम अपनी आत्मा से पूछें, कोई कमेटी बैठा कर के तय नहीं करना है। आत्म चिंतन करें। क्या भगवान ने जो सुकर्म करने के लिए जन्म दिया, मैं वह कर सका हूं? यह चिंतन ही हमारे विकास का मार्ग निकालता है। यही मुक्ति का मार्ग निकालता है। व्यष्टि, समष्टि और परमेष्टि की बात पूज्य तनसिंह जी ने समझाई कि अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को समर्पित कर दें समाज के लिए और अपने घेरे को बड़ा कर दें, समाज की इच्छाओं को भी परमेश्वर को समर्पित कर दें, इस बात को हम नहीं समझ पाए।

अभी मैं दो-तीन दिन से यह बातें सुन रहा हूं कि हमारे लोग बहुत डरपोक हो गए हैं। डरने लग गए हैं कि राजपूत इकट्ठे हो रहे हैं तो लोग कहीं हमको जान नहीं जाए कि यह क्यों इकट्ठे हो रहे हैं। हमको तो गर्व होना चाहिए कि हम सकारात्मक उद्देश्य के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। हम किसी का विनाश करने के लिए इकट्ठे नहीं हो रहे हैं। यह हमारा इतिहास भी बताता है। सारे समाज, विभिन्न जातियां जो हमारे साथ रही हैं, उनको यह भय नहीं है कि ये इकट्ठा क्यों हो रहे हैं। यह भय अंदर से हमारा निकल रहा है। इसीलिए मैं यह कहता हूं कि इस वीर कौम को यह भय निकाल देना है, छोड़ देना है। यह निर्मूल भय है और इसको कोई दूसरा निकाल नहीं सकता। हम सब मिलकर के भी प्रयास करें तो भी नहीं निकल सकता। लेकिन आप में से जो इस प्रकार का चिंतन करते हैं या उनके चिंता हो जाती है, **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

'कौम का दर्द आग का शोला न बन जाए'

(पेज एक से लगातार)

यह जो समारोह एक साल तक मनाया गया, इसका समापन आज है। सभी की इच्छा थी कि यह समापन समारोह दिल्ली में ही मनाया जाए क्योंकि दिल्ली में आसपास के दूसरे प्रदेशों के लोग ज्यादा इकट्ठे हो सकते हैं। दिल्ली शहर में भी हिंदुस्तान के हर प्रदेश के लोग रहते हैं इसलिए उनके बीच भी जो तनसिंह जी ने अपने जीवन में कहा और किया, वह बात पहुंचनी चाहिए। इसलिए आज यह समारोह आयोजित हो रहा है। निरंतर कोई काम किया जाए, लगातार काम किया जाए तो उसका असर होता है और जीवन में सुधार तभी आएगा जब हम ऐसा कोई असरदार तरीका अपनाएंगे। इसी आधार पर तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। यह व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि तक पहुंचाने वाला साधना मार्ग है। इसमें व्यक्ति अपने को सीमित नहीं रखता बल्कि अपना विस्तार करता है और समाज में इकट्ठा होता है अर्थात अपनी स्वयं की जो इच्छाएं हैं उन्हें समाज की इच्छाओं के प्रति समर्पित करता है। कोई काम यदि मेरे करने से समाज का या परिवार का नुकसान हो रहा है तो मैं चुप हो जाऊं, वह काम नहीं करूं। यह तो है सही बात और मुझे तो मेरा काम करना है इससे परिवार का नुकसान हो या समाज का, यह है अवनति का भाव। श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना से यह सामाजिक भाव विकसित हो जाता है। लेकिन संघ इतना ही करके रुक नहीं जाता है। इससे आगे की साधना है परमेष्टि की साधना। अपने अंतर को बिल्कुल निर्मल करो। अंतर जब निर्मल होगा तो आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है। इसलिए अपने सभी दुगुर्णों को, अपनी सभी विकृतियों को धीरे-धीरे समाप्त करना आवश्यक है और इस प्रकार का यह काम चल रहा है। लेकिन अभी एक सहगीत गाया था, उसकी एक पंक्ति थी - कौम के अरमान मुझ में बोलते हैं। कौम के अरमान क्या है, कौम की इच्छा क्या है, उसका भी ध्यान रखना आवश्यक है। कौम का असली अरमान तो यही है कि व्यक्ति अपने आप को सुधारे, संगठित हो, समाज को साथ लें और संगठित होकर एक शक्ति के रूप में उभरे। असली संगठन वही होता है जिसमें सब अपने अंतर को निर्मल करने की प्रक्रिया पर चलते हैं अन्यथा तो हम देखते हैं कि राजनीतिक पार्टियों आदि के संगठन एक दूसरे का पांव काटने के लिए लगातार लगे रहते हैं। संगठन ऐसा होना चाहिए जो कि वास्तव में शक्तिशाली हो उसके लिए यह साधना मार्ग है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

'कौम के इतिहास में आग बुझाने वालों में आए हमारा नाम'

(पेज एक से लगातार)

और अपना संपूर्ण जीवन उस युग की मांग को पूरा करने के लिए लगा देता है। जैसे अभी राम की जय सुनकर हमको जोश आया क्योंकि राम हमारे पूर्वज थे और राम की संतान होने का गौरव हमें प्राप्त है। लेकिन राम भी एक युग पुरुष थे और उन्होंने अपने तात्कालिक युग की मांग की पूर्ति की इसीलिए आज भी हम उन्हें युगपुरुष के रूप में जानते हैं और जब उनके जयकारे लगते हैं तो हमको भी जोश आ जाता है। अनेकों अनेकों युगों में इस प्रकार के युगपुरुष आते रहे, चाहे वह राम के रूप में हो, चाहे कृष्ण के रूप में हो, चाहे बुद्ध के रूप में हो, चाहे महावीर के रूप में हो और ऐसे ही एक युगपुरुष के रूप में पूज्य तनसिंह जी आए जिनकी हम आज जन्म शताब्दी मना रहे हैं। वर्तमान युग की जो मांग थी उस मांग को उन्होंने पूरा करने का प्रयास किया, इसलिए हम उन्हें युग पुरुष की संज्ञा दे सकते हैं। एक 21 साल का युवक, जिसके सामने पूरा का पूरा अपना जीवन पड़ा है, कमाई करनी है, पढ़ाई करनी है, ऐसे व्यक्ति के मन में दीपावली की रात में एक चिंतन होता है कि मेरे समाज में रोशनी कैसे होगी। हम सब लोग दीपावली मनाते हैं लेकिन क्या हमारे भीतर इस प्रकार का चिंतन आरंभ होता है? ऐसा चिंतन हमारे मन में नहीं आता है इसलिए हम युगपुरुष नहीं बन पाते हैं और जिसके इस प्रकार का चिंतन उत्पन्न होता है वह युगपुरुष बन जाता है। हां, हम चिंता जरूर करते हैं। हम जहां भी पांच आदमी बैठते हैं, चिंता करते हैं कि हमारे समाज का क्या हाल हो रहा है, हमारे समाज की क्या स्थिति हो रही है, हमारा समाज किस गर्त में जा रहा है, पतन की गहराई में जा रहा है। लेकिन चिंता करके अपने घर पर चले जाते हैं और घर पर जाकर इस चिंता को भूल जाते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने चिंता करके एल चिंतन भी किया कि जो इस प्रकार से गर्त में जा रहे हैं, वह क्षत्रिय जो गर्दन कटने के बाद भी तेरह तेरह मील तक तक लड़ता था, जो अपने राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर हुआ करता था, जो मंदिर की, गाय की, स्त्री की और मान मयार्दाओं की रक्षा के लिए तत्पर रहता था वह समाज आज इस पतन की गहराई में क्यों जा रहा है? जो राष्ट्र को मार्ग बताया करता था वह स्वयं दूसरों की ओर मार्ग के लिए देखने का किस प्रकार से प्रयत्न कर रहा है? जो इस प्रकार चिंतन करके समस्या के कारण को खोजते हैं और उसका समाधान प्रस्तुत करते हैं, वह युगपुरुष कहलाते हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(जन्म शताब्दी समारोह में वक्ताओं के उद्बोधन का संपादित अंश)

दुगार्दास जी की तरह दुर्भाग्य को सौभाग्य माना पूज्य तनसिंह जी ने

(केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत)

हम एक ऐसे महामानव के जन्म शताब्दी समारोह में सम्मिलित हुए हैं जिनके जीवन के बारे में अनेक प्रेरक बातें पहले उनके जीवन पर आधारित वृत्त चित्रों के माध्यम से और उसके बाद में अनेक वक्ताओं ने अपने वक्तव्य में जो चर्चा की उसके माध्यम से हम सब ने जानी है। एक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने अभाव से ग्रसित एक परिवार में जन्म लिया और जन्म के साथ ही परिस्थितियों की विकटता उनके सामने आई। दुर्भाग्य उनका सहोदर था और 4 साल की छोटी सी आयु में अपने पिता को खो दिया। उन्होंने उसके बाद में आने वाली चुनौतियों को दुगार्दास की भांति अपने लिए एक सौभाग्य मान करके आगे बढ़े। ऐसे आदर्श जीवन के प्रणेता श्रद्धेय तनसिंह जी को हम सब लोग स्मरण करने के लिए, उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिए हम आज यहां एकत्रित हुए हैं। कल्पना कीजिए एक ऐसा बालक जिसके पिता का साया सर से उठ गया हो और ऐसे कठिन परिस्थिति में अपनी मां से दूर रहकर के अकेले बाड़मेर जैसे शहर में आकर के रहना और अपनी प्राथमिक शिक्षा को वहां पूरा करना और अपना आधा कच्चा पक्का भोजन बनाकर के उन सारी चुनौतियों को पार करते हुए बाद में चौपासनी स्कूल पहुंचकर और फिर वहां से निकलकर उच्च शिक्षा हेतु पिलानी तक पहुंचना कितना कठिन रहा होगा। उन्होंने केवल अपनी ही चिंता नहीं की बल्कि अपने समाज के अन्य लोगों की चिंता की। जो पंक्ति में मेरे से पीछे खड़ा है उसकी चिंता करना और उसकी चिंता के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा, पुरुषार्थ की पराकाष्ठा करना उनका स्वभाव था। मैंने पढ़ा है, अनेक बार सुना भी है कि कठोर परिश्रम करते हुए उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी गंभीर संकट में पहुंच गया। लेकिन उसके बाद में भी जो मेरा है उसके लिए कार्य करना मेरा दायित्व है, मेरा कर्तव्य है, मेरी जिम्मेदारी है इस बोध के साथ में जो व्यक्ति आगे बढ़ा आज उसका परिणाम है कि 100 साल बाद में भी हम सब लोग एकत्रित होकर के उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना समाज को परिवर्तित करने के लिए की। व्यक्ति के निर्माण से परिवार का निर्माण, परिवार के निर्माण से समाज का निर्माण, समाज के निर्माण से राष्ट्र का निर्माण और राष्ट्र के निर्माण से विश्व का कल्याण करने की प्रक्रिया का जो सूत्रपात किया, सतोगुणी शक्तियों को संगठित कर समाज की ताकत बढ़ाने का उन्होंने जो कार्य किया, आज मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि देशभर में ऐसे लाखों लोग होंगे जिनके जीवन में कहीं ना कहीं सतोगुण के इस बीज की स्थापना हुई है। जिस प्रकार की विपरीत परिस्थितियां आज हैं, जिनकी चर्चा पूर्व के वक्ताओं ने की है, जिस प्रकार से समाज में मूल्यों का क्षरण हो रहा है, ऐसी स्थिति में उन मूल्यों की स्थापना की जिम्मेदारी क्षत्रिय समाज की है। इसलिए हम सब की जिम्मेदारी इन विषम परिस्थितियों में और भी अधिक बढ़ जाती है। क्षत्रिय समाज के डीएनए में शायद कुछ खास बात अवश्य है, कुछ ना कुछ विशिष्टता अवश्य है कि जितने भी ईश्वरीय तत्व को प्राप्त करने वाले लोग, जितने भी देव देवता पैदा हुए हैं, वे सभी इस क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए हैं। तो निश्चित रूप से ईश्वर ने हमें कुछ न कुछ ऐसी विशेषता अवश्य दी है जिसका यदि हम ठीक से संयोजन और संधारण करें तो हम भी देवत्व को प्राप्त हो सकते हैं। जब कभी भी इस देश में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है तो क्षत्रिय शक्ति ने उस परिवर्तन को साकार करने में अपना अमूल्य योगदान किया है। आज भी देश परिवर्तन के कगार पर हैं और हमें इस बात के लिए विचार करने की आवश्यकता है कि इस बदलते हुए परिदृश्य में हमारा क्या योगदान होगा, हमारी क्या भूमिका होगी। श्रद्धेय तनसिंह जी ने संघ का जो बीजारोपण किया है, उससे राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश के बहुत बड़े क्षेत्र में अनेक परिवारों के जीवन में परिवर्तन आया है लेकिन इस कार्य को, इस विचार को और अधिक विस्तार देने की आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण से आज का यह कार्यक्रम, जो देश की राजधानी में हुआ है, निश्चित रूप से एक बहुत बड़ा प्रयास और कदम होगा।

सिद्धांत के साथ समझौता नहीं करता क्षत्रिय

शक्ति सिंह गोहिल (राज्यसभा सांसद एवं प्रदेश अध्यक्ष गुजरात कांग्रेस)

आज हम पूज्य श्री तनसिंह जी की जन्म शताब्दी मना रहे हैं। कहा जाता है कि सत्य की शताब्दी होती है और झूठ के 10-20 साल। पूज्य तन सिंह जी सत्य थे, उनकी सोच सही थी और इसीलिए आज हम उनकी जन्म शताब्दी बना रहे हैं। पूज्य तनसिंह जी साहब ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना दीपावली की रात्रि को की। उन महामानव की सोच को, चिंतन को देखिए। हम सब तो त्यौहार में व्यस्त रहते हैं लेकिन वह दीपावली की उस रात को भी समाज की चिंता में मग्न थे। हमारा इतिहास सुनहरा है क्योंकि क्षत्रिय ने केवल अपने स्वार्थ का संधान नहीं किया, खुदगर्जी के लिए काम नहीं किया बल्कि परमार्थ के लिए पुरुषार्थ किया। अगर कोई कमजोर है, कोई लाचार है, या भूमि को जरूरत है या किसी अबला पर अत्याचार हो रहा है तो उनको बचाने के लिए अपना सर्वस्व छोड दिया। उन्होंने क्षात्रधर्म की साधना की थी और इसीलिए हमारा इतिहास सुनहरा है। पूज्य तनसिंह जी साहब ने, हम सब में उस इतिहास की भावना बनी रहे, इसी के चलते श्री क्षत्रिय युवक संघ का सिद्धांत रखा। इसका मूल मंत्र है परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्। उस सिद्धांत को जीवंत रखने का काम पूज्य तनसिंह जी साहब ने कहा और किया मैं उनके चरणों में नमन करता हूं। इतिहास साक्षी है कि जब भी अवसर आया, हमने चाहे शास्त्र, शस्त्र, सत्ता या संपत्ति जो भी मिला उसमें अहंकार नहीं किया। हमने मानवता के नाते सेवा का काम किया है और इसीलिए क्षत्रिय का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। मैं यह भी कहूंगा कि क्षत्रिय ने शासन के साथ समझौता करके अपनी सुविधा नहीं देखी। हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप चाहते तो शासन के साथ सहयोग करके सुविधा ले लेते पर उन्होंने मातृभूमि के स्वाभिमान के लिए संघर्ष का मार्ग चुना। यह क्षत्रिय का स्वभाव है कि सिद्धांत के साथ समझौता नहीं करता। जीत का ही इतिहास नहीं होता, पराजित भी हो पर सिद्धांत के साथ लड़ना अगर किसी ने सिखाया तो हमारे पूर्वजों ने सिखाया है। अगर कहीं भगवान ने अवतार भी लिया है तो उसके लिए भी क्षत्रिय कुल को उन्होंने पसंद किया है। भगवान श्री राम और भगवान कृष्ण भी क्षत्रिय थे। आज हम यह प्रार्थना करते हैं कि हमें वह शक्ति मिले जिससे जो पूज्य तनसिंह जी का विचार था कि क्षत्रिय कैसा होना चाहिए, वैसे हम बनें।

विरले युगपुरुष थे पूज्य श्री तनसिंह जी

अनुराग ठाकुर (केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार)

परम पूज्य तनसिंह जी की जयंती पर मैं उन्हें कोटि-कोटि वंदन करता हूं। जिस संघ की वैचारिक नींव मात्र 20 वर्ष की आयु में एक छात्र द्वारा अपने छात्रावास के कमरे में रखी गई हो और उसका आज देश की राजधानी दिल्ली में इतना बड़ा सम्मेलन देखकर मेरे हृदय को अति प्रसन्नता हो रही है। राजपूत समाज वास्तव में देश और समाज की रक्षा करने के लिए सदैव समर्पित रहा है। यही कारण है कि जब क्षत्रिय शस्त्र उठाते हैं तो केवल अपनी रक्षा करने के लिए नहीं वरन देश और समाज की रक्षा करने के लिए उठाएं। महाराणा प्रताप ने अपनी लड़ाई क्षत्रियों की रक्षा के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज की रक्षा हेतु लड़ी थी। न्याय और धर्म की रक्षा करना ही क्षत्रिय धर्म है। महलों को छोड़ रणभूमि में जीवन बिताया है, तब जाकर क्षत्रिय होने का हमने गौरव पाया है। ऐसे युगपुरुष विरले ही होते हैं जो देहत्याग के इतने वर्षों के बाद भी समुदाय के इतने सारे लोगों को एक साथ जोड़ने में और समाज को एक सूत्र में बांधने में समर्थ होते हैं। ऐसा सामर्थ्य आदरणीय तन सिंह जी का ही हो सकता है। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना राजपूत समाज के अंदर संस्कारों को भरने के लिए की, उनके चरित्र निर्माण और क्षात्र धर्म के दायित्व से परिचित कराने के लिए की थी। उन्होंने अपनी त्याग और तपस्या से संगठन को इतना मजबूत बनाया कि 77 वर्ष बाद भी लगातार बढ़ते हुए समाज और राष्ट्र सेवा में समर्पित स्वयंसेवकों को तैयार करने का कार्य लगातार चल रहा है। पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में क्षत्रिय समाज की युवा पीढ़ी को धर्म, संस्कृति, राष्ट्र और मानवता के कल्याण में नियोजित करने का मार्ग आज भी बता रहे हैं। जब जब भारत भूमि को अपने सपूतों की जरूरत पड़ी तब खून का एक-एक कतरा बहाकर हमने अपनी मातृभूमि का गौरव बढ़ाने का कार्य किया है। शौर्य और साहस के प्रतीक होने के साथ ही दया, क्षमा, करुणा, न्याय और धर्म का सदैव हम ने पालन किया है और आगे भी करते रहेंगे। पूज्य तनसिंह जी आधुनिक युग के अग्रणी विचारकों में से एक हैं जिनके आदर्श को अपनाकर आज अनेक क्षत्रिय युवा समाज और राष्ट्र की सेवा में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी का भी संघ में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी आप अपना मार्गदर्शन हमें सदा देते रहेंगे।

पूज्य श्री की सीख को जीवन में उतारें

दीया कुमारी (उपमुख्यमंत्री, राजस्थान)

सादा जीवन और उच्च विचार के धनी पूज्य श्री तनसिंह जी समाज सुधारक, साहित्यकार और कुशल राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने समाज में जितनी भी कुरीतियां थीं उनको दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया। मुझे उनसे मिलने का अवसर तो नहीं मिला लेकिन जो कुछ भी मैंने उनके बारे में सुना है, पढ़ा है, उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला है। उनका जीवन हम सभी के लिए एक आदर्श जीवन है। एक क्षत्रिय का जीवन कैसा होना चाहिए, अपने धर्म की पालना कैसे करनी चाहिए, यह उन्होंने हमें सिखाया। न केवल अपने समाज के लिए बल्कि सर्व समाज को साथ लेकर उन्होंने जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है। आज के समय में, आज के युग में उनके जीवन को आदर्श मानते हुए हमारा क्या कर्तव्य है इस पर हमें विचार करना चाहिए। आज बहुत बड़ी संख्या में मातृशक्ति यहां पधारी हुई हैं, हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि हम उनके लिए क्या कर सकते हैं। उनकी शिक्षा के लिए, उनको आत्मनिर्भर बनाने के लिए, उनको सशक्त बनाने के लिए समाज का क्या कर्तव्य है, इस पर भी चिंतन हमें करना चाहिए। हमारे समाज में अनेक महान वीर वीरांगनाएं हुए हैं जिनसे हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है लेकिन क्या हम उस धर्म को आज भी निभा रहे हैं यह सोचने की आवश्यकता है। राष्ट्र निर्माण में हमारी भागीदारी भी आवश्यक है। पूज्य श्री तन सिंह जी के जीवन से जो सीख मिलती है उसे अपने जीवन में उतारने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

संपादकीय

कृतज्ञ समाज का संघ के प्रणेता को वंदन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष 28 जनवरी 2024 को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ। जन्म शताब्दी वर्ष का आगाज 25 जनवरी 2023 को पूज्य श्री की जन्मस्थली (बेरसियाला) जैसलमेर में आयोजित जयंती कार्यक्रम से हुआ जब माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से पूज्य श्री तनसिंह जी के संदेश को घर घर तक पहुंचाने का निर्देश दिया गया। उसी के अनुरूप वर्ष भर में सैकड़ों कार्यक्रमों की श्रृंखला का आयोजन हुआ जिसकी पूणार्हुति 28 जनवरी को दिल्ली में हुई। जिन क्षेत्रों में श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य मुख्य रूप से चल रहा है उनसे इतनी दूर दिल्ली जैसे नए क्षेत्र में जन्म शताब्दी समारोह के आयोजन का निर्णय इसीलिए लिया गया कि देश की राजधानी, जहां होने वाली गतिविधियों पर देश-विदेश की दृष्टि रहती हैं, वहां युगपुरुष पूज्य श्री तनसिंह जी के संदेश का प्रसारण तो हो ही साथ ही हमारे समाज के अनुशासन, संगठन और सामर्थ्य की एक झलक प्रकट कर हमारे समाज के प्रति स्वार्थी और विरोधी तत्वों द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रकार के दुष्प्रचार से पनपी धारणाओं को दूर किया जा सके। साथ ही दिल्ली और उसके आसपास के हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब आदि राज्यों के राजपूत बहुल क्षेत्र में संघ का संपर्क बढ़े जिससे संघ का मूल कार्य वहां गति पा सके।

लक्ष्य बड़ा और महत्वपूर्ण था और चुनौतियां भी उसी के अनुरूप अनेक प्रकार की थीं। लेकिन अपने ध्येय के मार्ग में आने वाली हर चुनौती को स्वीकार करना ही क्षत्रियत्व है। दृढ़ संकल्प, दूरदर्शी योजना और गहरे चिंतन के आधार पर यह चुनौती स्वीकार की गई और पूज्य श्री तनसिंह जी की प्रेरणा और परमेश्वर की कृपा से न केवल प्रारंभ में असंभव सा दिखने वाला कार्य संभव हो गया बल्कि अपने सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी सफल रहा। संघकार्य के दृष्टिकोण से दिल्ली जैसा नया और दूरस्थ क्षेत्र, कड़ाके की ठंड, गणतंत्र दिवस के कारण अनेक प्रतिबंध, यातायात की समस्याएं जैसी अनेकों विपरीत परिस्थितियों के बावजूद देश के कोने-कोने से समाजबंधु अपने प्रणेता पूज्य श्री तनसिंह जी को वंदन करने जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम पहुंचे। अपनी पारंपरिक वेशभूषा पहनकर पहुंचे समाजबंधुओ और मातृशक्ति द्वारा अनुशासन और एकता का जो संदेश वहां दिया गया, उसकी गूंज पूरे देश में प्रतिध्वनित हुई। स्नेह और अपनत्व की सरिता में सराबोर होकर सभी अपने को कृतार्थ अनुभव कर रहे थे और देश की राजधानी में सामाजिक शक्ति के इस अभूतपूर्व प्रकटीकरण के साक्षी बनने पर स्वयं को सौभाग्यशाली मान रहे थे। इतनी बड़ी संख्या में दिल्ली जैसे व्यस्त शहर में बाहर से लोगों के आने पर भी किसी प्रकार की असुविधा किसी को नहीं हुई, यह हमारे रक्त की तासीर में विद्यमान अनुशासन और संयम का ही परिणाम है जिसकी सराहना प्रशासन और आमजन, सभी के द्वारा की गई।

अपने प्रणेता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए जिस प्रकार समाज में उत्साह का वातावरण रहा, उससे यह स्पष्ट है कि पूज्य तनसिंह जी ने जिस जीवन दर्शन और विचार क्रांति का बीजारोपण समाज में श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में किया, उसका प्रसारण उत्तरोत्तर बढ़ रहा है और समाज अपनी आकांक्षाओं और अरमानों को पूज्य श्री के समाज के प्रति देखे गए स्वप्न में प्रतिबिंबित होते हुए देख रहा है। पूज्य श्री तनसिंह जी की अभिव्यक्ति - 'कौम के अरमान मुझ में बोलते हैं' - का अर्थ अब प्रकट हो रहा है जब धीरे-धीरे समाज उनके विराट स्वरूप को पहचान कर उनके दिखाए मार्ग पर चलने को उद्यत हो रहा है। जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र आदि में किए गए संपर्क के दौरान यह बात प्रकट हुई कि वहां भी समाजबंधुओं में पूज्य तनसिंह जी और उनके विचारों को जानने और आत्मसात करने की तीव्र उत्कंठा है। किंतु पूज्य श्री तनसिंह जी का दर्शन मात्र बौद्धिक न होकर क्रियात्मक है जो नियमित और निरंतर अभ्यास द्वारा ही जीवन में ढाला जा सकता है, इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के माध्यम से उस दर्शन का व्यावहारिक प्रशिक्षण आवश्यक है। अतः जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान जिन नए क्षेत्रों में संपर्क के माध्यम से संघ का बीजारोपण हुआ है, आगे उसे शाखा और शिविर के द्वारा संरक्षण और पोषण प्रदान करना भी आवश्यक है तभी निकट भविष्य में वहां पर संघ कार्य पल्लवित और पुष्पित हो सकेगा और पूज्य श्री तनसिंह जी का दर्शन सबके जीवन में फलीभूत हो सकेगा।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों के रूप में यह जन्म शताब्दी समारोह भी हमारे लिए हीरक जयंती की ही भांति अनेक वर्षों में एक बार आने वाला अवसर था जब वर्षों तक संघ में किए गए हमारे अभ्यास और उससे जुटाई गई क्षमताओं और चारित्रिक गुणों का परीक्षण भी होता है और उनमें निखार भी आता है। विपरीत परिस्थितियों के आने पर भी निराश हुए बिना लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना ही दृढ़ संकल्प की कसौटी है। ऐसा दृढ़ संकल्प होने पर ही जीवन भर कार्य किया जा सकता है। यही ध्येयनिष्ठा है। ध्येयनिष्ठ बनकर कार्य करने पर ही समाज के साथ हमारा जुड़ाव और गहरा होता है। ऐसे आयोजनों में निश्चित रूप से कार्यशक्ति खर्च भी होती है लेकिन पूर्ण क्षमता से कार्य करने पर एक नई ऊर्जा का उदय भी होता है जिससे अधिक उत्साह और समर्पण के साथ संघकार्य में जुटना संभव होता है। बिना थके निष्काम भाव से निरंतर कर्मरत रहने पर ही पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा प्रणीत संघदर्शन हमारे अनुभव में उतरता है और अग्रेतर विकास के द्वार खुलते हैं। संघ हमारे लिए कर्मरत रहने के ऐसे ही अवसर निरंतर उपलब्ध कराता रहता है और हमें इन अवसरों का पूरा लाभ उठाते हुए और अधिक निष्ठा पूर्वक पूज्य तनसिंह जी के द्वारा सौंपे कार्य को पूरा करने में लगना है। ऐसा होने पर पूज्य श्री की कृपा सदैव बरसती रहेगी।

'एक सबके लिए और सब एक के लिए के भाव के साथ आगे बढ़ें'

(राजेंद्र सिंह राठौड़, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजस्थान)

देश की राजधानी में आज का यह दृश्य इतिहास के पन्नों में दर्ज होगा। केसरिया रंग से सराबोर इस स्टेडियम में जो आज दृश्य उपस्थित हैं, इस प्रकार का अनुशासन और दृश्य फिर देखने को शायद ही मिले। पूज्य तनसिंह जी के बारे में कई वक्ताओं ने बताया। अगर मैं कहूं कि तन सिंह जी महामानव के रूप में एक विचार थे, जीवन संस्कृति के अगुआ थे, संस्कार को स्थापित करने वाले महामानव थे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनके द्वारा स्थापित किए गए मानदंड निश्चित तौर पर श्रेष्ठ नागरिक बनाने की ओर हम सब लोगों को सदैव प्रेरित करते रहेंगे। दशकों पहले राजस्थान के छोटे से गांव के छोटे से कमरे में श्री क्षत्रिय युवक संघ ने जन्म लिया। वह छोटा सा पौधा विराट वट वृक्ष के रूप में आज हमारे सामने उपस्थित है। यह चरित्र निर्माण और संस्कार निर्माण का कारखाना चरैवेति-चरैवेति के सिद्धांत पर लगातार चल रहा है। कितने ही वर्ष बीत गए। 1956 में पूज्य तनसिंह जी की लिखी पुस्तक समाज चरित्र आज भी समसामयिक है। जिस प्रकार भगवान राम ने अपने जीवन से मयार्दाएं स्थापित की ठीक उसी प्रकार तन सिंह जी द्वारा प्रारंभ किया गया श्री क्षत्रिय युवक संघ भी जीवन की मयार्दाएं और संस्कार क्या हो, इस पर काम कर रहा है। मैं यह निवेदन अवश्य करना चाहूंगा कि समय बदला है, समय की धारा बदली है, राजतंत्र चला गया, लोकतंत्र आ गया। तलवार भाला उठाने की जगह कलम उठाने का समय आ गया। सिर कटाने की जगह सिर गिनाने का समय आ गया। कल का राजपुत्र आज रज का, धरती का पुत्र बन गया। ऐसे मौके पर हम सबको विचार करना पड़ेगा कि हम अपने गौरवमयी इतिहास को याद करते हैं, हमें गर्व है हमारे इतिहास पर लेकिन एक इतिहास जो आज लिखा जा रहा है हमारे कर्मों के कारण, वह इतिहास क्या होगा? हमारे वंशज क्या पढ़ेंगे? 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' के जमाने में हमें युगानुकूल प्रतिस्पर्धा में ढलना पड़ेगा। समय के थप्पेड़ों ने हमारे गढ़ किलो को खंडहर में बदल दिया तो क्या नव सृजन की आवश्यकता नहीं है? कर्नल जेम्स टॉड ने कहा था कि निराशा के दौर में कोई भी सभ्यता अपने रीति रिवाज को कायम नहीं रख सकती। लेकिन हम निराशा नहीं आशा के दौर से गुजर रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नेतृत्व में हम अपने रीति-रिवाज को, जीवन संस्कृति को कायम रख सकते हैं। निराशा को आशा में बदलने के लिए पुरुषार्थ हमें करना पड़ेगा। श्रद्धेय आयुवान सिंह जी ने कहा है कि श्रमजीवी सभ्यताएं स्वयं सक्षम और ताकतवर बनती हैं। अब हम सब लोगों को सब क्षेत्र में श्रमजीवी बनना पड़ेगा, चाहे वह क्षेत्र राजनीति का हो, उद्योग का हो, अध्ययन का हो। हमें नेतृत्वकर्ता की भूमिका में आकर, सर्व समाज को साथ लेकर समाज और राष्ट्र के उत्थान की भावनाओं के साथ आगे बढ़ना होगा। हमारे पूर्वज जमीन के लिए लड़ते थे। जगह-जगह भोमियों के थान बने हुए हैं जो अपनी जमीन के लिए लड़े और मिट गए लेकिन आज हमारे नौजवान पुरखों की जमीन बेचकर गांव से शहर की ओर भाग रहे हैं। हम अपनी जड़ों से कट रहे हैं इस बात पर हमें ध्यान देना पड़ेगा। सोशल मीडिया के जमाने में हमारे इतिहास को विकृत करने की कोशिश की जा रही है लेकिन हमारे रक्त से लिखे इतिहास को कोई मिटा पाए यह संभव नहीं। हमारे में राजनीतिक धारा को बदलने की शक्ति आई भी है लेकिन हममें सहकार का, संगठन का भाव होना चाहिए। एक सबके लिए और सब एक के लिए के भाव से हम आगे बढ़े तो निश्चित तौर पर हम शक्तिशाली बनेंगे।

(जन्म शताब्दी समारोह में वक्ताओं के उद्बोधन का संपादित अंश)

'पूज्य तनसिंह जी के संदेश को घर-घर तक पहुंचाना है'

पूज्य तनसिंह जी के दिल में एक पीड़ा थी कि मेरे समाज के लिए मैं कुछ करूं। नागपुर में रहते हुए आरएसएस के संपर्क में आने के बाद उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। उनकी कई पुस्तके हैं, कई स्वयंसेवकों को लिखित पत्र हैं, उनमें से कुछ पंक्तियां मैंने अपनी बात कहने के लिए चुनी हैं। तनसिंह जी कहते हैं कि - 'मैं आऊंगा, मुझे जाना है हर गांव और नगर की हर कुटिया में। पर जहाँ वन्दनवार है, स्वागत की मुस्कुराहट है, वहां पहले जाऊंगा और अवश्य जाऊंगा। बनजारा जो हूँ।' एक-एक शब्द में अपने समाज के लिए कितना श्रेष्ठ भाव है। इसी तरह वे कहते हैं - 'मैं समाज को आराध्य मानता हूं और इसीलिए उस पर उपकार की भावना से नहीं, उसकी सेवा की भावना से आराधना करता हूं। वह मेरा उपास्य है। मेरे प्राणों की हलचल का स्वामी है।' समाज की सेवा इसी भाव से हो सकती है। अभी प्रार्थना में हमने गाया कि साधन की कमी है कार्य कठिन है, पूज्य श्री तनसिंह जी के सामने साधनों की कमी रही लेकिन आज हमारे पास साधन की कमी नहीं है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात को लेकर के हमें गांव-गांव, घर-घर जाना है। तनसिंह जी ने यह भी कहा है कि 'जो मेरे सिवा किसी की राह नहीं देखता उसके पास मैं ही नहीं जाऊंगा तो कौन जाएगा?' तनसिंह जी की यह भावना हमें सभी तक पहुंचाने का माध्यम बनना है। उन्होंने कहा है कि 'जो कुछ भीतर है, वही बाहर है। अपने भीतर पवित्रता और महानता की अनुभूति ही मुझे हर साधक को भी पवित्र और महान देखने के लिए प्रेरित करती है।' ऐसी उच्च भावनाएं पूज्य तन सिंह जी की थी। पूज्य तनसिंह जी किसी भी प्रकार के वाद में फंसने की बात नहीं करते हैं, वे राष्ट्र भावना की बात करते हैं। क्षत्रिय को देश को बांटना नहीं है बल्कि देश को एक करना है इसीलिए तो हमारे सभी राजाओं ने अपनी रियासतों को देश के चरणों में रख दिया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के गुजरात के दो वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीण सिंह जडेजा और बलवंत सिंह चुडासमा जिनकी आयु 94 वर्ष की है, इन दोनों ने प्रण लिया कि जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 94 गांव में जाएंगे और तन सिंह जी का संदेश वहां पहुंचाएंगे और मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि इन दोनों ने 94 की बजाय 101 गांव में जाकर के जन्म शताब्दी समारोह का प्रचार प्रसार किया। यही भाव है जो संघ को अन्य संस्थाओं से अलग बनाता है।

(गुजरात सरकार के पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह चूड़ासमा)

'देश धर्म की रक्षा के लिए आगे आएं क्षत्रिय'

आज पूज्य तनसिंह जी के इस जन्म शताब्दी समारोह में भारत के कोने-कोने से पधारे सभी भाई बंधुओं को और माता बहनों को प्रणाम करता हूं। ऐसे कार्यक्रम में आज मैं पहली बार आया हूं और पहली बार में मुझे यह अनुभव हो रहा है कि मेरा भारत देश आज सुरक्षित है। पूज्य तनसिंह जी का जो एक सपना था कि मेरा क्षत्रिय देश, धर्म, समाज की रक्षा के लिए आगे बढ़े, आज इतनी बड़ी संख्या में यहां पर क्षत्रियों का जो जन सैलाब उपस्थित है वह उसी सपने को साकार कर रहा है। आने वाले समय में भारत देश की रक्षा के लिए यही क्षत्रिय बढ़-चढ़कर कार्य करेगा। इतिहास गवाह है, जब-जब देश, धर्म, समाज पर संकट आया तब क्षत्रियों ने ही दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देने का कार्य किया। उन्होंने दुश्मनों के सर लेने का भी कार्य किया और अपने सर देने का भी कार्य किया। आज मैं सभी से निवेदन करना चाहूंगा कि हर घर से श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक कार्यकर्ता होना चाहिए। आने वाले समय में भारत देश के हर कोने से श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक सैलाब निकालने की आवश्यकता है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने संस्कार निर्माण का जी कार्य प्रारंभ किया है उसको जो आगे लेकर चल रहे हैं मैं उन सबको धन्यवाद करता हूं और सभी से यही निवेदन करना चाहूंगा कि तनसिंह जी का यह सपना था कि क्षत्रिय समाज आगे बढ़े, मजबूत रहे, उसके लिए हमारे पूर्वजों ने देश के शत्रुओं से लोहा लिया। आने वाला समय भी उसी प्रकार का रहेगा तो हमें हमारे समाज की रक्षा के लिए, देश की रक्षा के लिए अपने आप को मजबूत रखने की आवश्यकता है।

(टी राजा सिंह, विधायक, तेलंगाना)

'शस्त्र बदले हैं, क्षत्रिय की जिम्मेदारी नहीं'

आप सब की बड़ी संख्या में उपस्थिति यहां होने से पूरे देश में एक संदेश गया है जिसके लिए आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं। मैं सभी युवाओं को और यहां उपस्थित माताओं, बहनों, बेटियों को यही कहना चाहूंगा कि पूज्य तन सिंह जी ने जो कई वर्ष पहले अपने भाव रखे, एक संगठन को तैयार कर हमें मार्ग दिया उस पर हमें चलना है। आपने देखा किस तरह से उन्होंने सबसे पहले अपने शरीर, अपने मन-मस्तिष्क को तैयार किया और फिर उसके बाद समाज को तैयार किया। आज इसकी जरूरत है कि हमें अपने आप को मजबूत करना है और हम जहां-जहां हैं, अपने आसपास के क्षेत्र को संगठित करना है, लीड करना है। हमें सबको साथ में लेकर चलना है। हमारे पूर्वज जिन्होंने इस धरती, धर्म, समाज और संस्कृति के संरक्षण और रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया है। आज वही बलिदान हमें एक अलग रूप में देना है। उसके लिए पहले अपनी क्षमता को बढ़ाना पड़ेगा जैसे पूज्य श्री तन सिंह जी ने सबसे पहले अपने आप को मजबूत बनाया। जब तक हम अपने आप को मजबूत नहीं करेंगे तन से, मन से, मस्तिष्क से तब तक हम किसी और से आग्रह नहीं कर सकते और उसको प्रेरित भी नहीं कर सकते। इसलिए सबसे पहले हमें अपने आप को मजबूत करना है और फिर अपने आसपास के लोगों को नेतृत्व प्रदान करना है। हमें सभी को साथ लेकर चलना है और भारत को ऊंचाइयों तक पहुंचाना है। हमने सदियों तक इस राष्ट्र को सुरक्षित रखा है, हमें आगे भी इस राष्ट्र को सुरक्षित और मजबूत रखना है। अस्त्र-शस्त्र बदल सकते हैं लेकिन जिम्मेदारी वही है। आज तलवार नहीं आज कलम की जरूरत है। आज हथियार नहीं बुद्धि के प्रयोग की आवश्यकता है। आज हम सबको एकजुट होकर एक दिशा में काम करने की आवश्यकता है। हम सभी के पास शक्ति हैं लेकिन यदि वह शक्ति अलग-अलग दिशा में खींचेगी तो उसका परिणाम शून्य होगा लेकिन यही शक्ति अगर एक दिशा में खींचेगी तभी समाज और राष्ट्र बलवान बनेगा।

(राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़, कैबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार)

पूज्य तनसिंह जी का ही विराट स्वरूप है श्री क्षत्रिय युवक संघ

पूज्य श्री तनसिंह जी ने जिस संघ रूपी पौधे का बीजारोपण किया था वह आज वटवृक्ष के रूप में दर्शन दे रहा है, जिसे देखकर हम सभी धन्यता अनुभव कर रहे हैं। हम सबके मन में प्रश्न उभरते होंगे कि वे युगपुरुष कैसे होंगे? जिनके जन्म शताब्दी में इतना जनसैलाब इकट्ठा हुआ है वह कैसे होंगे? कई उनको जानते भी थे, कई उनके साथ में भी रह चुके हैं और कई उनकी गोद में खेल के बड़े भी हुए। लेकिन जिन्होंने उन्हें देखा नहीं है, उनके मन में यह उत्सुकता रहती है कि वह कैसे होंगे। यदि उनको जानना हो कि वह युगपुरुष कैसे थे तो हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़कर उसे जानना होगा। वही उनका विराट स्वरूप है। उनकी लिखी हुई पुस्तके हैं उनमें वे मिलेंगे। संघ के शिविरों में खेले जा रहे खेलों में वे मिलेंगे, झनकार के गीतों में वे हमें मिलेंगे, बौद्धिक के पाठ पढ़ाते हुए हमें उनके दर्शन होंगे या हम यज्ञ की आहुति देते हैं उसकी ज्योति में हमें उनके दर्शन होंगे। लेकिन इसके लिए हमें संघ से जुड़ना पड़ेगा। इस कार्यक्रम में महिलाओं को बहुत अच्छी संख्या में उपस्थित देखकर प्रसन्नता हो रही है। मैं आप सभी मातृशक्ति से यही निवेदन करती हूं कि अपने जीवन में श्री क्षत्रिय युवक संघ को उतारो। माता निमार्ता होती है, चाहे वह माता मदालसा हो, चाहे माता अनुसूया हो, जीजाबाई हो, जयवंता बाई हो या फिर माता मोती कंवर जी हो। सब माताएं यही चाहती हैं कि मेरे भी राम जैसा पुत्र हो, महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे पुत्र हो, मीराबाई, लक्ष्मीबाई, हाड़ी रानी या पद्मिनी जैसी पुत्रियां हो लेकिन वह कैसे होगा, उसका पाठ पढ़ने के लिए हमें संघ में जाना पड़ेगा। वहीं यह संस्कार मिलेंगे कि माता निमार्ता कैसे बने। यहां से अपने मन में यह संकल्प लेकर जाएं कि मुझे भी वैसी ही माता बनना है जो श्रेष्ठ संतान का निर्माण कर सके।

(वरिष्ठ स्वयंसेविका एवं पूज्य तनसिंह जी की सुपुत्री जागृति बा हरदासकाबास)

25 जनवरी को देशभर में मनाई संस्थापक श्री की 100वीं जयंती

संघशक्ति

चौहटन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की सौवीं जयंती 25 जनवरी को अनेक स्थानों पर स्वयंसेवकों व समाजबंधुओ द्वारा मनाई गई। जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति भवन में भी 25 जनवरी को जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी की व्यथा को सभी तक पहुंचाने के लिए ही यह जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है और स्थान-स्थान पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस व्यथा को सभी समझें और पूज्य तनसिंह जी के बताए मार्ग पर चलना प्रारंभ करें, यही हमारा उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि संघ का कार्य करते हुए अनेक प्रकार की बाधाएं भी हमारे सामने आती हैं क्योंकि उनके माध्यम से परमेश्वर हमारी सहनशक्ति और क्षमता को बढ़ाना चाहता है। कार्यक्रम में जयपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाजबंधु सपरिवार सम्मिलित हुए। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह जी बैण्याकाबास सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। बाड़मेर के स्टेशन रोड स्थित मल्लीनाथ छात्रावास में भी भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट के तत्वावधान में पूज्य श्री तनसिंह जी की 100वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। पूज्य श्री तनसिंह जी का जीवन परिचय देते हुए कमल सिंह महेचा ने बताया कि तनसिंह जी एक कर्म योगी और अनूठे साहित्य के सृजनकर्ता थे। थॉमस कारलीन को उद्धृत करते हुए उन्होंने बताया कि किसी जाति या राष्ट्र को समाप्त करना है तो उस जाति और राष्ट्र के साहित्य को नष्ट कर दो, वे स्वतः ही नष्ट हो जाएंगे। तनसिंह जी ने युगद्दष्टा के रूप में कई पुस्तकें लिखी हैं जो समाज जागरण में प्रेरणा पुंज का काम कर रही है। उन्होंने संघ साहित्य के पठन-पाठन के साथ उससे मिलने वाली शिक्षा को जीवन में उतारने की बात भी कही। बाड़मेर संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली ने पूज्य श्री तनसिंह जी की माता जी द्वारा बताई गई बातों का संग्रह रमां के मुख सेर का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन बाड़मेर शहर प्रांत प्रमुख छगन सिंह लूणू द्वारा किया गया। पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती के उपलक्ष में प्रातः 10 बजे तनसिंह सर्कल से एक विशाल मोटरसाइकिल रैली का आयोजन भी किया गया जो शहर के मुख्य मार्गो से होकर निकली और जन्म शताब्दी समारोह का संदेश सभी तक पहुंचाया। भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट के तत्वावधान में ही पूज्य तनसिंह जी की जयंती का आयोजन श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस चौहटन में किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रान्त प्रमुख लाल सिंह आकोड़ा ने कहा कि जिस तरह भगवान कृष्ण ने अर्जुन को धर्म के मार्ग पर चलते हुए सत्य की जीत हेतु आगे बढ़ने को प्रेरित किया, उसी प्रकार पूज्य तनसिंह जी ने हमें क्षात्र धर्म के मार्ग पर चलाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसे संगठन की स्थापना की और हम सभी को इस पवित्र मार्ग पर चलने को अग्रसर किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक उदय सिंह देदूसर ने रमां के मुख सेर लेख का पठन किया। कृष्ण सिंह गौहड़ का तला, गेन सिंह नवापुरा, दुर्जन सिंह दुधवा, कमल सिंह मिये का तला, दुर्जन सिंह खारिया, गेन सिंह इंद्रोई, मदन सिंह नवापुरा, नारायण सिंह खाजूवाला सहित सैकड़ों समाजबन्धु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मुख्य समारोह स्थल दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में तैयारियों में लगे स्वयंसेवकों द्वारा भी 25 जनवरी को पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती मनाई गई। बाड़मेर में शिव प्रांत के भिंयाड़ में स्थित मातेश्वरी शिक्षण संस्थान में भी पूज्य श्री की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भिंयाड़ ने पूज्य श्री के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में बताया। इस अवसर पर मिट्टी से पूज्य तनसिंह जयंती की नामाकृति भी बनाई गई। अलवर के पीपली में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। चुरू जिले के भूकरका में भी पूज्य श्री तनसिंह जी की 100वीं जयंती मनाई गई। जीवराज सिंह भूकरका ने पूज्य श्री का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया। कार्यक्रम में मोहन सिंह, पृथ्वी सिंह, महिपाल सिंह, भवानी सिंह, निहाल सिंह, अभय राज सिंह, देवराज सिंह, भानुप्रताप सिंह, मेघराज सिंह, रविन्द्र सिंह, विजय सिंह आदि शामिल हुए। नुवां (रतनगढ़) में वीर दुर्गादास शाखा स्थल पर पूज्य श्री तनसिंह जी की 100 जयंती मनाई गई, साथ ही जन्मशताब्दी के मुख्य समारोह में नुवां से जाने वाली बस की तैयारियों पर चर्चा हुई। सीकर के नाथावतपुरा में स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान में भी जयंती मनाई गई। केकड़ी स्थित श्री जगदंबा राजपूत छात्रावास में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। बालोतरा प्रांत के टापरा गांव में स्थित नागणेची माता मंदिर में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। जालौर जिले के सुराणा गांव में भी कार्यक्रम हुआ। फरीदाबाद के सेक्टर 8 में स्थित महाराणा प्रताप भवन में भी पूज्य श्री की जयंती 25 जनवरी को मनाई गई जिसमें मदन सिंह बामणिया ने पूज्य श्री की जीवनी और श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में बताया। राजकुल संस्था के अध्यक्ष नारायण सिंह पांडुराई ने जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों के बारे में जानकारी दी। सूरत प्रांत के सरोली मंडल में स्थित अभिमन्यु उद्यान में भी पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने बताया कि पूज्य तनसिंह जी ने समाज को एक नया दर्शन दिया जिसको जीवन में उतारकर हम व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि तक की यात्रा कर सकते हैं। उनके जन्म शताब्दी वर्ष में उनके संदेश को पूरे देश भर में पहुंचाने के लिए वर्षभर कार्यक्रमों का आयोजन हुआ है और मुख्य समापन समारोह का आयोजन दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में किया जा रहा है। भोपाल सिंह शामल और बाबू सिंह रेवाड़ा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। पुणे के पिंपरी चिंचवड़ में भी जयंती कार्यक्रम रखा गया। चित्तौड़गढ़ स्थित श्री भोपाल राजपूत छात्रावास में भी पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया और उनके साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए। उदयपुर स्थित हरसिद्धि हॉस्टल और डूंगरपुर स्थित श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास में भी पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। पाली प्रांत में भी अनेक स्थानों पर जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। धींगाणा, खिन्दारागांव, राजेन्द्र नगर स्थित राजपुत सभा भवन, साण्डिया, बालाजी मंदिर सरदारसमन्द रोड, दुगार्दास छात्रावास पाली और छोटी रानी में कार्यक्रम आयोजित हुए। सीकर स्थित श्री कल्याण राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई जहां सभी वक्ताओं ने बताया कि पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना कर समाज के युवाओं में संस्कार निर्माण के साथ साथ दायित्व बोध को जागृत किया और समझाया कि उनका समाज, राष्ट्र और मानव मात्र के प्रति क्या दायित्व है। कार्यक्रम में नवरंग सिंह चिराना, मंगलदीप सिंह नुवा, महिपाल सिंह चंदाहन, राहुल सिंह तिहावली, धर्मेन्द्र सिंह मीरन, विशेष सिंह, डूंगर सिंह आसाडी, शिवराज सिंह तुनवा आदि उपस्थित रहे। नागौर स्थित श्री अमर राजपूत छात्रावास में भी पूज्य तनसिंह जी जयंती मनाई गई। छात्रावास अधीक्षक भंवर सिंह ने पूज्य तन सिंह जी की तस्वीर के आगे दीप प्रज्ज्वलित किया। जब्बर सिंह ने पूज्य तनसिंह जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में बताया। कार्यक्रम में छात्रावास के सभी छात्रों ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर-के अपनी श्रद्धा प्रकट की। कुचामन सिटी स्थित संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में भी जयंती मनाई गई। इसके अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर शाखा स्तर पर पूज्य श्री की सौवीं जयंती मनाई गई। चांधन, देवीकोट हिसार व बीकानेर में भी जयंती मनाई गई।

नई दिल्ली

मल्लीनाथ छात्रावास बाड़मेर

चित्तौड़गढ़

सीकर

फरीदाबाद

भिंयाड़

(पृष्ठ दो का शेष)

कौम का दर्द... असली काम तो है कि कैसे हम संगठित हो, शक्तिशाली बनें और अपनी आत्मा को परमात्मा की ओर ले चलने का कार्य करें। लेकिन आज अरमान दूसरे भी हैं। वे दूसरे अरमान क्यों पैदा हो गए? हमारे समाज की आज जो पतनावस्था है उससे वापस समाज को ऊपर ले जाना है उसका अरमान यह भी है। यह काम जब करना प्रारंभ करते हैं तो जो संगठन का निर्माण करने वाली बात है वह तो मुख्य है ही इसके अलावा भी कई समस्याएं आती हैं। वे समस्याएं आज के इस युग में हमारे सामने पैदा कर दी गई है। इनमें एक समस्या है हमारे इतिहास का विकृतिकरण। हमारा इतिहास त्याग और बलिदान से रचा गया। उस गौरवमयी इतिहास को बदला जा रहा है और उसे बदलने में अपने वोटों को बढ़ाने के लिए राजनीतिक पार्टियां भी समर्थन कर रही हैं। यहां राजनीतिक पार्टियों के अध्यक्ष महोदय, एक गुजरात के और एक राजस्थान के विराजमान हैं और इसलिए उनको हो सकता है बात बुरी लगे, लेकिन यह सत्य है। राजपूत के साथ यह गुजर रही है। राजपूत जिसको वोट देता है उसी का रहता है, यह हमारे चरित्र की विशेषता है कि हमने एक बात को पकड़ लिया है तो उसको पकड़े रखते हैं। समाज जिस किसी भी पार्टी को साथ देता है वह पार्टी क्या राजपूत को उसका सम्मान देती है। गौर कीजिए, गुजरात में एक भी राजपूत को लोकसभा की सीट नहीं मिली, क्यों? क्या हम वोट नहीं देते। राजस्थान में जितना हम किसी को वोट देते हैं उसके हिसाब से हमारा कोई रिप्रेजेंटेशन नहीं होता। हमारे अधिकारियों को इधर उधर डाल रखा है, उनको कोई सम्मानजनक जगह नहीं मिलती। यह क्या हो रहा है हमारे साथ? यह भी इस समाज का अरमान है और उस अरमान को पूरा करने के लिए आवश्यकता है कि हम एक संगठन में एकत्रित हो जाएं। हमारी यह चारित्रिक विशेषता आज के बिगड़े हुए लोकतंत्र में दोष बन गई है कि हम किसी एक का पल्ला पकड़ लेते हैं तो छोड़ते नहीं, हमारे हित का जो काम करने वाला है, हम उसके साथ रहेंगे, यह विचार जब तक नहीं बन पाएगा तब तक हमारी पूछ नहीं होगी। इसी प्रकार ईडब्ल्यूएस आरक्षण का मामला है। वर्तमान सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल में ईडब्ल्यूएस का आरक्षण दिया, बहुत अच्छा काम किया लेकिन उसके साथ बड़ी अजीब तरह की शर्तें लगा दी। उन शर्तों के कारण इस आरक्षण का लाभ हम नहीं ले पा रहे। जब इसकी रिपोर्ट की गई तो राजस्थान सरकार ने अन्य शर्तें हटाकर केवल साल भर में 8 लाख से ज्यादा आय का प्रावधान रख दिया। हम चाहते हैं केंद्र सरकार भी ऐसा करें। इसके लिए हम चारों तरफ से प्रयास कर रहे हैं, अनेक ज्ञापन भी दिए गए हैं, हो सकता है उन पर विचार भी हो रहा हो। हम राजस्थान की वर्तमान सरकार से भी चाहते हैं कि वह भी अपनी तरफ से बोले कि यह कार्य होना चाहिए। क्या हम भारत के नागरिक नहीं है, क्या हम किसी पॉलिटिकल पार्टी को वोट नहीं देते हैं, क्या हमारे मताधिकार का हम प्रयोग नहीं करते हैं? हम करते हैं लेकिन फिर भी हमारी कीमत इसलिए नहीं होती कि हम हमारी पुरानी परंपराओं को छोड़कर अभी एक नहीं हो पा रहे हैं। आज हमारी जो खुद की विकृतियां हैं उनको हम नहीं देख रहे हैं। हर परिवार में क्यों झगड़ा हो रहा है, क्यों भाई भाई लड़ रहे हैं? क्या यह हमारी गलती नहीं है? हम परिवार में एक नहीं रह सकते तो इतने बड़े समाज में कैसे एक रहेंगे? इस समाज को एक रहना है यह भी समाज का अरमान है। पहले सभी जातियों में इतना सम्मान और सौहार्द था लेकिन उसको किसने बिगाड़ा? इस लोकतंत्र ने। इस लोकतंत्र ने विभाजन करने की कोशिश की है और उस विभाजन को दूर करने में हमको भी अग्रणी बनना चाहिए। यह सब बातें करने की जरूरत पड़ी है क्योंकि यह भी इस कौम के अरमान है। लेकिन कौम का अरमान यह भी है कि हमारे साथ अगर अन्याय हो रहा है तो इस गीत की पंक्ति फिर सुन लीजिए - ध्यान रखना मौन मेरा टूट न जाए, दर्द मेरा आग का शोला न बन जाए। ध्यान रखना कि यह मेरा जो मौन है, अभी तक कोई एक्शन नहीं ले रहे हैं तो यह टूट न जाए। यदि आवश्यकता पड़ी तो समाज का यह दर्द आग का शोला भी बन सकता है। इसलिए जिनकी जिम्मेदारी है उनको इस पर ध्यान देने की जरूरत है। लेकिन हमको ध्यान देने की जो बात है वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। वह है - अपने आप को सुधारो। श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम यही है कि हर क्षत्रिय अपने संस्कारों को बनाएं, अपने आप को सुधारें और उन सुधरे हुए लोगों की जो संगठित शक्ति होगी, उस शक्ति के होने पर किसी को अपने अरमान बताने की भी आवश्यकता नहीं, हम खुद उनकी पूर्ति कर लेंगे।

कौम के इतिहास... ऐसा ही पूज्य तनसिंह जी ने किया श्री क्षत्रिय युवक संघ का निर्माण करके। उन्होंने राम जैसे हमारे महान पूर्वजों की केवल बातें करके हमारे अंदर जोश भरने का प्रयास नहीं किया बल्कि उस राम को पैदा करने का प्रयास किया, उस सीता को बनाने का प्रयास किया जो राम के साथ में 14 वर्ष तक वनवास जा सकती है। उन्होंने उसे लक्ष्मण के निर्माण का प्रयास किया जो भाई की सेवा के लिए 14 वर्ष के वनवास के लिए तत्पर हो सकता है। जो इस प्रकार के मार्ग का निर्माण कर सकते हैं उन्हीं को युगपुरुष कहा जा सकता है, वही सच्चा क्षत्रिय कहला सकता है। इसीलिए आज हम राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के अंदर पूज्य तनसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह मना रहे हैं। आपको यह लगता होगा कि हम बार-बार इस प्रकार की भीड़ इकट्ठा क्यों करते हैं लेकिन यह भीड़ नहीं है ये एक अनुशासित संगठन है। यदि हम इस प्रकार का अनुशासन नहीं दिखा पाते हैं तो वह संगठन नहीं बनता है। संघ हमको इस प्रकार की एक प्रणाली देता है, इस प्रकार का मार्ग देता है कि यहां आकर प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर एक क्षत्रिय बनने का प्रयास करता है। यही अनुशासन है। एक दृष्टांत है कि एक जंगल में आग लगी और आग लगने के बाद सारे के सारे पशु पक्षी उस आग को बुझाने में लग गए। कोई मिट्टी डाल रहा था, कोई पानी डालने का प्रयास कर रहा था, कुछ उसे आग से दूर जाने का भी प्रयास कर रहे थे। एक छोटी सी चिड़िया अपनी चोंच के अंदर नदी से पानी भरकर उस आग में डालने का प्रयास कर रही थी। वह चिड़िया जब वहां से पानी लेकर आती थी तो कुछ तो पानी बीच में गिर जाता था, कुछ आग की गर्मी से भाप बनकर उड़ जाता था। एक हाथी यह देख रहा था। उसने कहा कि चिड़िया! तेरी छोटी सी चोंच के अंदर तू पानी लाकर इस आग को बुझाने का प्रयास कर रही है लेकिन यह आग तू किस प्रकार से बुझा पाएगी। ऐसा कहकर उस हाथी ने उसका मजाक उड़ाया। उसे चिड़िया का जो उत्तर था वह हमको आज के समारोह से एक प्रेरणादाई संदेश के रूप में लेकर जाना चाहिए। उसका उत्तर था कि मेरी इस चोंच में जो पानी भरकर मैं ले जा रही हूं इससे चाहे यह आग बुझे या ना बुझे, इस पर कोई फर्क पड़े या ना पड़े, लेकिन जब कभी इस जंगल का इतिहास लिखा जाएगा उस दिन मेरा नाम इस आग को बुझाने वालों में आएगा, आग लगाने वालों में नहीं। हम आज के समारोह से यही संदेश लेकर जाएं कि हम जहां कहीं भी रहें, जिस किसी भी राज्य में या क्षेत्र में रहें, जहां भी हम काम करें, इस तरह से रहें कि आज जो इतिहास लिखा जा रहा है हमारी कौम का उसमें आग लगाने वालों में हमारा नाम नहीं हो, आग बुझाने वालों में हमारा नाम हो। ईश्वर से यही प्रार्थना है।

निर्मूल भय को... उनके लिए मैं भगवान से प्रार्थना कर सकता हूं कि इनका थोड़ी शक्ति दें। जो दूसरों का त्राण करता है उसको भय किसका? वो भगवान की शरण में चला गया है तो फिर भगवान से ही डरने लग गए हम। ऐसा सोच हमारा नहीं होना चाहिए। इस भय को निकाले बिना हम सच्चे क्षत्रिय भी नहीं बन पाएंगे। तो सबसे पहली आवश्यकता है कि सच्चा क्षत्रिय बनें। निर्मूल भय को हटा दें। हमारे से कोई भी भयभीत नहीं हो, यह हम विश्वास दिलाएं अपने जीवन से। हमारा पुराना इतिहास बताता है कि एक ठाकुर भी होता था गांव में तो दूसरी जातियों और उनकी बहू बेटियां सब सुरक्षित रहती थीं। यह हमारे पूर्वजों का इतिहास है कि मंदिर के लिए, संस्कृति के लिए हमने अपनी कभी परवाह नहीं की। दुनिया का सबसे सुंदर एक नारा है - जियो और जीने दो और क्षत्रिय के लिए नारा है मरकर के भी दूसरों को जीने का अधिकार दो। वो दिन कब आएगा? वह दिन तो आज ही है, आया हुआ ही है। इस भय को निकालते ही वह दिन आ जाएगा कि इस भारत को कोई मिटा नहीं सकता। हमारी संस्कृति को कोई मिटा नहीं सकता, हमारे धर्म की जड़ इतनी गहरी है कि इसको कोई उखाड़ नहीं सकता। उखाड़ सकते हैं तो हम ही उखाड़ सकते हैं। वह हम ना बन जाएं ऐसा सोच हमको अपने जीवन में उतारना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी ने गीत लिखा जिसे अभी गाया, 'गीत तुम्हारे कंठ के बगीचे खिलते रहे, मैं चुन न सका यह बात बड़ी अकुलाती।' जब वे यह गीत लिख रहे थे तब मैं भी पास में बैठा था तो मैंने बीच में टोक करके पूछ लिया कि यह आप सोच रहे हैं या लोग सोच रहे हैं? तब उन्होंने कहा कि तुम्हारे समझ में आएगा लेकिन मेरे रहते नहीं आएगा। आज मुझे समझ में आ रहा है कि यह गीत उन्होंने क्यों लिखें। यह श्री क्षत्रिय युवक संघ उन्होंने क्यों प्रारंभ किया। क्यों इतने अधिक लोगों को जोड़ा और भविष्य में जुड़ते रहने का एक मार्ग छोड़ गए। आप लोगों ने सब के सहयोग से पूरे भारतवर्ष में इस जयंती को राष्ट्रीय राजधानी में मनाने के लिए जो प्रयत्न किए हैं उनके परिणाम स्वरूप आज के कार्यक्रम की आवाज पूरी दुनिया में फैल गई है। बस यही इसकी सफलता है। **जय संघ शक्ति।**

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त रक्तदान शिविर का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त 21 जनवरी को जयपुर स्थित संघशक्ति भवन में श्री प्रताप युवा शक्ति द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें शहर में रहने वाले समाजबंधुओं ने रक्तदान किया। कार्यक्रम का प्रारंभ केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर के आगे दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस दौरान राजस्थान की उपमुख्यमंत्री माननीया दीया कुमारी ने भी संघशक्ति पहुंचकर रक्तदाताओं का उत्साहवर्द्धन किया। दोनों राजनेताओं ने माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर, वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी एवं माननीय संघप्रमुख श्री से भी भेंट की एवं विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। भाजपा नेता श्रवण सिंह बगड़ी, कांग्रेस नेता महेंद्र सिंह खेड़ी और जितेंद्र सिंह बसेठ सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति इस दौरान उपस्थित रहे।

ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह जादौन बने डीजीपी, इनकी बेटी भी है आईपीएस

उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ निवासी ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह जादौन असम के नए पुलिस महानिदेशक बने हैं। वे 1 फरवरी 2024 को अपना कार्यभार ग्रहण करेंगे। इनकी पुत्री ऐश्वर्या सिंह भी आईपीएस अधिकारी है तथा दिल्ली के लाजपत नगर में एसीपी के रूप में नियुक्त है।

माननीय संरक्षक श्री को भ्रातृ शोक

श्री दुर्जन सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के बड़े भ्राता **श्री दुर्जन सिंह रोलसाहबसर** का देहावसान 14 जनवरी 2024 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

अर्जुनसिंह देलदरी को पितृशोक

श्री परबत सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक अर्जुन सिंह देलदरी के पिता **श्री परबत सिंह जी काबावत** का देहावसान 24 जनवरी 2024 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

देवीसिंह राणीगांव को पितृशोक

श्री मंगलसिंह राठौड़

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक देवीसिंह राणीगांव के पिता **श्री मंगलसिंह राठौड़** (सेवानिवृत बीएसएफ हवलदार) का देहावसान 12 जनवरी 2024 को 76 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

आत्मीय जनों के सामाजिक भाव का वंदन, अभिनंदन

दिसंबर 2021 में हीरक जयंती की तैयारियों के समय एक विचार पनपा कि हमारे प्रणेता पूज्य तनसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह देश की राजधानी में मनाया जाये। विचार जनवरी 2023 में परिपक्व हुआ और 25 जनवरी 2023 से 25 जनवरी 2024 तक पूज्य श्री का जन्म शताब्दी वर्ष मनाना तय हुआ और 28 जनवरी को देश की राजधानी में स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में जन्म शताब्दी वर्ष के समापन पर विशाल कार्यक्रम करने का निर्णय हुआ। सहयोगियों ने इस निर्णय की अनुपालना में वर्ष भर विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रम किए। नये क्षेत्रों में संपर्क प्रारंभ हुआ, यात्राएं की गई, शिविर भी रखे गये, स्नेह मिलन किए गये। सर्दी के मौसम में दूरस्थ क्षेत्रों से यात्रा की समस्या नजर आयी तो साथियों ने विशेष रेलगाड़ियों के बारे में बात चलाई और 16 विशेष रेलगाड़ियां चलनी तय हुई। देश की राजधानी हम लोगों के लिए अनजान जगह थी, स्थानीय स्तर पर संघ का काम पर्याप्त नहीं होने के कारण स्थानीय सहयोगी भी नहीं थे। इतना बड़ा स्टेडियम किराये करना और फिर वहां व्यवस्थाएं करना एक बड़ी चुनौती थी। इतने बड़े आयोजन में होने वाले खर्च का प्रबंधन भी एक बड़ा प्रश्न था। दिल्ली के प्रशासन की विभिन्न एजेंसियों से कार्यक्रम की अनुमति लेना भी एक बड़ा विषय था लेकिन परमेश्वर की कृपा बरसी, सामाजिक भाव से ओत प्रोत नये सहयोगी मिलते गये और कारवां आगे बढ़ता गया। अनेक तरह की बाधाओं के बावजूद समारोह के दो दिन पहले तक पूरी 16 रेलगाड़ियों की अनुमति मिल गई। स्टेडियम को लेकर भी अनेक तरह की औपचारिकताएं कदम दर कदम पूरी होती गई और साथी स्वयंसेवकों ने वहां मोर्चा संभाल कर सब व्यवस्थाओं को भी अंजाम दे दिया। अनजान शहर में परिचय बढ़ता गया और ऐसे नये सहयोगी मिलते गये जिन्होंने अपनत्व की सीमाओं के पार जाकर इस आयोजन को अपना स्वयं का आयोजन मानकर स्वयं को प्रस्तुत कर दिया। इतने बड़े आयोजन के खर्च का प्रबंधन भी होने लगा और समाजजनों ने इसे अपने ऊपर ओढ़ लिया। हरियाणा, उत्तरप्रदेश जैसे अनजान क्षेत्रों में साथी स्वयंसेवकों के दल पहुंचने लगे और पूज्य तनसिंह जी का संदेश घर घर पहुंचने लगा। माननीय भगवान सिंह जी द्वारा भेजे आमंत्रण को साथी स्वयंसेवक घर घर पहुंचाने लगे और सामाजिक भाव से ओत प्रोत स्थानीय समाज बंधु इसमें सहयोगी बनते गये। और अंत में 28 जनवरी आ गई जब दिल्ली के रेलवे स्टेशन, मैट्रो स्टेशन और स्टेडियम की ओर जाने वाली सड़कें केशरिया रंग से रंग गई। राजस्थान के दूरस्थ क्षेत्रों के साथ साथ गुजरात, हरियाणा, उत्तरप्रदेश और दिल्ली के समाज जनों ने स्टेडियम को केशरिया रंग से रंग दिया। सागर की तरह मयार्दा में बंधकर हमने हमारी विशालता के दर्शन किए और करवाये। पूज्य तनसिंह जी की दिव्य उपस्थिति ने हमें प्रेरणा दी और हम सबने उस प्रेरणा के प्रकट रूप के दर्शन किए। संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक ने पूज्य श्री के अलौकिक स्पर्श का अनुभव किया और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। हम सब स्वयंसेवकों के लिए ऐसा दुर्लभ अवसर उपलब्ध करवाने में सहयोगी रहे प्रत्येक समाज जन के प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। संघ के सभी स्वयंसेवकों की ओर से मैं वहां आने वाले प्रत्येक समाज जन, उन्हें वहां आने के लिए प्रेरित करने वाले प्रत्येक सज्जन, उनके आने के लिए व्यवस्था जुटाने वाले प्रत्येक सज्जन, समारोह के खर्च के प्रबन्धन में सहयोग करने वाले प्रत्येक सज्जन और कार्यक्रम के आयोजन में सहयोगी बने प्रत्येक सज्जन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि आप सबका सहयोग यूं ही बना रहेगा जिससे हम संघ के वास्तविक कार्य को विस्तार देकर अधिकतम समाज बंधुओं के जीवन में पूज्य श्री के अवतरण में सहयोगी बन सकेंगे।

लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास, संघप्रमुख, श्री क्षत्रिय युवक संघ

पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी स्मारिका का विमोचन

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी स्मारिका का विमोचन 24 जनवरी की श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी एवं पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त उदय माहुरकर द्वारा दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब में किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सरवड़ी ने कहा कि हमारी निष्ठा हमारा बहुत बड़ा गुण है लेकिन इस निष्ठा को स्वार्थी और सत्तालोलुप राजनीतिक दलों के साथ बांधने से यह एक बड़ा दुर्गुण सिद्ध हो रही है। आज राजपूत समाज पर चारों तरफ से आक्रमण हो रहा है। हमारे इतिहास को विकृत किया जा रहा है। राजनीति, प्रशासन, मीडिया जैसे क्षेत्रों में हमारा प्रतिनिधित्व न्यूनतम हो गया है। प्रत्येक क्षेत्र में हमें हाशिए पर डालने के प्रयास हो रहे हैं। हमारे विरुद्ध दुष्प्रचार करके अन्य जाति समुदायों को हमारे विरुद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। इन सभी आक्रमणों को हम तभी सफल कर सकते हैं जब हम स्वयं अपने आप को सुधारें और उन शुद्ध हुए लोगों से एक संगठित शक्ति का निर्माण करें। यह केवल साधना से ही संभव है और इस साधना का मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ। कार्यक्रम के बाद प्रेसवार्ता का आयोजन भी किया गया जिसमें पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए जन्म शताब्दी समारोह के आयोजन की विस्तृत जानकारी पत्रकारों को दी गई।

पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी संदेश यात्रा की पूर्णाहुति

पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्म स्थान बेरसियाला (जैसलमेर) से 22 दिसंबर को रवाना हुई जन्म शताब्दी यात्रा की पूर्णाहुति 14 जनवरी को हुई जब संदेश यात्रा दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में पहुंची। इस अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास भी उपस्थित रहे। उन्होंने यात्रा के स्वागत कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को स्बोधित करते हुए कहा कि यह सन्देश यात्रा सैकड़ो गांवों और नगरों में पूज्य श्री तनसिंह जी का संदेश पहुंचाते हुए दिल्ली पहुंची है। समाज जागरण का यह संदेश कभी भी व्यर्थ नहीं जा सकता। समाज के प्रति जो व्यथा तनसिंह जी की थी वही हम सब की भी व्यथा बन जाए इसीलिए उनके संदेश को घर घर तक पहुंचाने के लिए यह जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। कार्यक्रम को जम्मू कश्मीर के पूर्व कैबिनेट मंत्री शक्ति सिंह परिहार, बस्तर के पूर्व महाराजा कमल चंद्र भंजदेव और शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी ने भी संबोधित किया और पूज्य श्री तनसिंह जी के संदेश को सभी तक पहुंचाने की बात कही। संदेश यात्रा में साथ रहे महेंद्र सिंह तारातरा ने अपने अनुभव बताए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कार्यक्रम का संचालन किया और बताया कि यह यात्रा 21 दिन में 5000 किमी और 500 से अधिक गांवों की यात्रा पूरी करके दिल्ली पहुंची है।

नागाणा धाम में क्षत्रिय शिक्षक सम्मेलन संपन्न

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त बाड़मेर स्थित नागाणा धाम में बालोतरा, बाड़मेर एवं जैसलमेर जिले के क्षत्रिय शिक्षकों का स्नेहमिलन कार्यक्रम 14 जनवरी को आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में 1100 शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज की शिक्षकों से अपेक्षाएं एवं उन अपेक्षाओं को पूरा करने के मार्ग पर चर्चा की गई। समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए कार्य करने एवं शिक्षा के प्रति जागृति बढ़ाने पर भी चर्चा की गई। कार्यक्रम में महारानी भटियानी ट्रस्ट जसोल के अध्यक्ष किशन सिंह, मदन सिंह (मोहन लाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर), मोहन सिंह बुड़ीवाड़ा (संरक्षक, स्प्रिंग बोर्ड) उम्मेद सिंह अराबा (प्रधान) सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव सहयोगियों के साथ उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org